सितम्बर 2024 वर्ष 3, अंक 8

दयालबाग़ एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड टु बी यूनिवर्सिटी)

डी.ई.आई.– मासिक समाचार

— माइकलएंजेलो

“ हममें से अधिकांश लोगों के लिए सबसे बड़ा खतरा यह नहीं है कि हम बहुत ऊंचा लक्ष्य रखते हैं और चूक जाते हैं, बल्कि यह है कि हम बहुत छोटा लक्ष्य रखते हैं और उसे प्राप्त कर लेते हैं।”

खण्ड

खंड क : डी.ई.आई...3

खंड ख : डी.ई.आई. ऑनलाइन और दूरस्थ शिक्षा..8

खंड ग : डी.ई.आई. के भूतपूर्व छात्र (AADEIs & AAFDEI).....................11

दयालबाग़ एजुके ानल इंस्टीट्यूट
(डीम्ड टु बी यूनिवर्सिटी)
दयालबाग़, आगरा– 282005

विषय–सूची

खंड कः डी.ई.आई.

1. 2024 स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय द्वारा तीन डी.ई.आई. प्राध्यापकों को वैज्ञानिकों की शीर्ष 2% विश्व श्रेणी में स्थान दिया गया........ 3
2. डी. ई.आई. में शिक्षक दिवस का आयोजन........ 3
3. डी. ई.आई. में अभियांत्रिकी दिवस का आयोजन........ 4
4. डी. ई.आई. में हिंदी दिवस का आयोजन........ 4

संकाय समाचार

5. कला संकाय 5

छात्रोपलब्धियाँ........ 5

अभियांत्रिकी संकाय

6. स्मार्ट इंडिया हैकाथॉन 2024 के लिए डी.ई.आई में इंटरनल हैकाथॉन........ 5

डॉ. निरत सैनी के साथ एक संवाद सत्र........ 6

विज्ञान संकाय

7. शिक्षकोपलब्धियाँ........ 6

सामाजिक विज्ञान संकाय

8. शिक्षकोपलब्धियाँ........ 7

टेक्निकल कॉलेज

9. शिक्षकोपलब्धियाँ........ 7
10. डी.ई.आई प्रेम विद्यालय गर्ल्स इंटरमीडिएट कॉलेज........ 7

छात्रोपलब्धियाँ........ 7

खंड खः डी.ई.आई. ऑनलाइन और दूरस्थ शिक्षा

11. कोऑर्डिनेटर की डेस्क से........ 8
12. उच्च शिक्षा संस्थानों में प्लेसमेंट (Placement) का परिदृश्य 9
13. केन्द्रों से समाचार 10

करोल बाग और मुरार केंद्रों पर स्वतंत्रता दिवस समारोह........ 10

लुधियाना, जालंधर और भोपाल केंद्रों पर शिक्षक दिवस समारोह........ 10

खंड गः डी.ई.आई. के भूतपूर्व छात्र **(AA DEIs & AAFDEI)**

14. संपादक की डेस्क से........ 11
15. अंग्रेजी कोई भी?........ 11

सीमा स्वामीप्यारी संधीर

16. दयालबाग शैक्षणिक संस्थान के पूर्व छात्र एवं मित्र संघः कार्यक्रम रिपोर्ट........ 12

पाठकों का कोना

17. लेख और कविता पर विचार, अगस्त अंक........ 13

अर्पित माथुर

प्रकाशन समितियाँ / सम्पादकीय बोर्ड........ 14

खण्ड 'क' : डी.ई.आई.

2024 स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय द्वारा तीन डी.ई.आई. प्राध्यापकों को वैज्ञानिकों की शीर्ष 2% विश्व श्रेणी में स्थान दिया गया

स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी के वैज्ञानिकों की शीर्ष 2% विश्व श्रेणी का हालिया अध्ययन, जॉन पी.ए. आयोनिडिस तथा अन्य द्वारा "अगस्त 2024 Data-update for Updated Science-wide Author Databases of Standardized Citation Indicators", शीर्षक के तहत प्रकाशित किया गया, Elsevier Data Repository, Version.7, 16 सितंबर, 2024 को जारी किया गया यह अध्ययन मूल रूप से PLOS Biology जर्नल (इम्पैक्ट फैक्टर 7.8) 2019 में प्रकाशित हुआ था। उक्त अध्ययन में तीन डी.ई.आई. प्राध्यापकों को प्रतिष्ठित सूची में रखा गया, जिन्होंने इस साल भी अपनी श्रेणी बरकरार रखी।

प्रो. वी.बी. गुप्ता

प्रो. सुखदेव रॉय

प्रो. डी.के. चतुर्वेदी

प्रोफेसर वी.बी. गुप्ता, समन्वयक, डी.ई.आई. दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम, और पूर्व प्रमुख, टेक्सटाइल इंजीनियरिंग विभाग, आई आई टी दिल्ली, पॉलिमर और फील्ड रसायन विज्ञान के उप–क्षेत्र में, प्रोफेसर सुखदेव रॉय, प्रमुख, भौतिकी और कंप्यूटर विज्ञान विभाग, डी.ई.आई., में Optoelectronics और Photonics का उप–क्षेत्र और सक्षम और रणनीतिक प्रौद्योगिकियों का क्षेत्र, और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और इमेज प्रोसेसिंग के उप–क्षेत्र और सूचना और संचार प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में फुटवियर प्रौद्योगिकी विभाग के प्रमुख, प्रोफेसर डी.के. चतुर्वेदी, सूची में शामिल हैं।

यह व्यापक विश्लेषण स्कोपस डेटाबेस के उद्धरणों का उपयोग करके किया जाता है, जिसमें सभी वैज्ञानिकों के दीर्घ कालिक कैरियर का आकलन, 1 अगस्त, 2024 के स्कोपस स्नैपशॉट के आधार पर, उद्धरण वर्ष 2023 के अंत तक अद्यतन किया गया, जिसमें कम से कम पांच प्रकाशित शोध पत्र शामिल हैं। सभी वैज्ञानिक क्षेत्रों के लेखक कुल उद्धरणों, एच–सूचकांक, सह–लेखक–समायोजित श्राइबर एचएम–सूचकांक, विभिन्न लेखकत्व पदों पर कागजात के उद्धरण और एक समग्र संकेतक (सी–स्कोर) पर विचार करते हुए अपनी श्रेणी पर आधारित होते हैं। सभी वैज्ञानिकों को 22 क्षेत्रों और 174 उप–क्षेत्रों में वर्गीकृत किया गया है। यह चयन सी–स्कोर (स्व–उद्धरण के साथ और बिना) या उप–क्षेत्र में 2% या उससे ऊपर की प्रतिशत श्रेणी के आधार पर शीर्ष 1,00,000 वैज्ञानिकों पर आधारित था।

प्रो. वी.बी. गुप्ता पॉलिमर में 1,16,445 वैज्ञानिकों में से 1,991वें स्थान पर हैं (शीर्ष 1.7% में), प्रोफेसर सुखदेव रॉय Optoelectronics और Photonics में 1,20,816 वैज्ञानिकों में से 1,938वें स्थान पर हैं (शीर्ष 1.6% में) और प्रोफेसर डी.के चतुर्वेदी. आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और इमेज प्रोसेसिंग में 3,99,064 वैज्ञानिकों में से 6,431 (शीर्ष 1.6% में) । इस वर्ष प्रो. सुखदेव राय की श्रेणी में 386 और प्रो. डी.के. चतुर्वेदी की श्रेणी में 377 स्थानों का सुधार हुआ।

डी. ई.आई. में शिक्षक दिवस का आयोजन

शिक्षक समाज के सच्चे वास्तुकार हैं, जो अपने ज्ञान से पीढ़ियों का मार्गदर्शन करते हैं और कक्षाओं से परे मूल्यों को स्थापित करते हैं। शिक्षक दिवस 2024 समारोह छात्रों, शिक्षकों और गणमान्य व्यक्तियों को शिक्षकों के अमूल्य योगदान का सम्मान करने के लिए एक बार पुनः मनाया गया। शिक्षक जिनके अटूट समर्पण, ज्ञान और करुणा मन को आकार देते हैं, सपनों को प्रेरित करते हैं और एक उज्ज्वल भविष्य की नींव रखते हैं। कार्यक्रम की शुरुआत विश्वविद्यालय प्रार्थना के साथ हुई, जिसने उत्सव के लिए एक

सम्मानजनक और श्रद्धापूर्ण वातावरण निर्मित किया। डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन का संक्षिप्त परिचय और शिक्षक दिवस के महत्त्व को एक कविता, 'Guiding Lights: Illuminating Minds' के साथ प्रस्तुत किया गया। कविता के अंतर्गत शिक्षकों को ज्ञान के मशाल वाहक, युवाओं के दिमाग को करुणा और ज्ञान के साथ मार्गदर्शन करने के रूप में खूबसूरती से सम्मानित किया गया। एक मनमोहक भारतीय संगीत प्रदर्शन भी आयोजित किया गया। उनके अमूल्य योगदान को स्वीकार करते हुए, इस कार्यक्रम में सेवानिवृत्त शिक्षकों, प्रो. राहुल कैप्रिहन, श्री अनामी सरन, प्रो. रेनू जोसन, डॉ. संजीव भटनागर और प्रो. शालिनी निगम के प्रति श्रद्धा व्यक्त की गई। इस अवसर पर उपस्थित सेवानिवृत्त शिक्षकों को सम्मानित किया गया और उन्होंने अपनी यात्रा को दर्शाते हुए हार्दिक संदेश साझा किए। डी.ई.आई. के कार्यवाहक निदेशक प्रोफेसर सी. पटवर्धन ने अपनी क्षमताओं को प्रदर्शित करने के लिए एआई का उपयोग करते हुए एक विचारोत्तेजक भाषण दिया। हालाँकि, उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि हालाँकि एआई उल्लेखनीय कार्य कर सकता है, लेकिन यह कभी भी मानव शिक्षकों की भूमिका को प्रतिस्थापित नहीं कर सकेगा। उन्होंने ओपन बुक प्रणाली के महत्त्व पर भी प्रकाश डाला, जिसका उद्देश्य रटने को हतोत्साहित करना और गहरी समझ और आलोचनात्मक सोच को प्रोत्साहित करना है। कार्यक्रम का समापन धन्यवाद प्रस्ताव और विश्वविद्यालय गीत के बाद राष्ट्रगान के साथ हुआ। कार्यक्रम का संचालन कला एवं शिक्षा संकाय के विद्यार्थियों द्वारा किया गया।

डी. ई.आई. में अभियांत्रिकी दिवस का आयोजन

भारत के सबसे प्रमुख इंजीनियर सर मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया की जयंती के अवसर पर, अभियांत्रिकी क्षेत्र में उनके उल्लेखनीय कार्यों की याद में हर साल 15 सितंबर को अभियांत्रिकी दिवस मनाया जाता है। इस वर्ष, यह कार्यक्रम 14 सितंबर 2024 को चैप्टर्स ऑफ द इंस्टीट्यूशन ऑफ इंजीनियर्स (इंडिया) के छात्र और फुटवियर टेक्नोलॉजी विभाग, अभियांत्रिकी संकाय, दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी) दयालबाग़, आगरा –282005 द्वारा डी.ई.आई. के अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार हॉल में संयुक्त रूप से आयोजित किया गया था। इस दिन का विषय था "Bringing Sustainability with Engineering Solutions by Adopting Latest AI-Driven Technologies-" कार्यक्रम के मुख्य अतिथि KEC इंटरनेशनल लिमिटेड में रेलवे के कार्यकारी निदेशक इंजीनियर कौशल कोदेसिया थे। कार्यक्रम में कार्यवाहक निदेशक, डी.ई.आई., प्रो. सी. पटवर्धन, कुलसचिव, डी.ई.आई., प्रो. आनंद मोहन और कोषाध्यक्ष डी.ई.आई., श्रीमती स्नेह बिजलानी भी उपस्थित थे। कार्यक्रम में फुटवियर टेक्नोलॉजी विभाग के प्रमुख प्रोफेसर डी.के.चतुर्वेदी द्वारा सभी अतिथियों का अभिनंदन किया गया। समारोह की शुरुआत प्रोफेसर डी.के.चतुर्वेदी सहित विशिष्ट वक्ताओं द्वारा दीप प्रज्ज्वलन के साथ हुई, जिसके बाद विश्वविद्यालय प्रार्थना हुई। प्रो.चतुर्वेदी ने स्वागत भाषण दिया और इंजीनियरिंग संकाय की वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत की। मुख्य अतिथि ने अभियंताओं की युवा पीढ़ी के लिए एक प्रभावशाली भाषण दिया। उन्होंने उभरते अभियंताओं को अपने करियर को आकार देने के लिए ईमानदारी, आत्मविश्वास, प्रयास और नेतृत्व कौशल के महत्त्व को समझाया। उन्होंने सफलता के निर्माण के लिए आवश्यक कौशल और विकास के मार्ग पर भी अपने विचार साझा किए और अपने अनुभवों से छात्रों को अवगत कराया। उन्होंने उन विजेताओं को पुरस्कार भी दिए, जिन्होंने स्टूडेंट चैप्टर्स के तहत आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं जैसे अंतिम वर्ष के छात्रों के लिए फुटवियर एप्टीट्यूड प्रतियोगिता, Spell bee प्रतियोगिता, निबंध–लेखन, प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता आदि में भाग लिया था। प्रोफेसर सी पटवर्धन ने छात्रों को संबोधित किया और जीवन के अपने अनुभव और कठिन चुनौतियों से निपटने के तरीके साझा किए। इस कार्यक्रम में बी.टेक प्रथम वर्ष से लेकर अंतिम वर्ष तक के कई छात्रों ने भाग लिया, छात्रों का उत्साह प्रशंसनीय था। कार्यक्रम का समापन इंजीनियर वी.पी. मल्होत्रा, प्रिंसिपल, टेक्निकल कॉलेज, डी.ई.आई. के धन्यवाद प्रस्ताव के बाद राष्ट्रगान और विश्वविद्यालय गीत की प्रस्तुति के साथ हुआ।

डी. ई.आई. में हिंदी दिवस का आयोजन

14 सितंबर, 2024 को डी.ई.आई. के कला संकाय के हिंदी विभाग द्वारा 'हिंदी दिवस' के अवसर पर एक विशेष व्याख्यान का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि संस्थान के कार्यवाहक निदेशक प्रो. सी. पटवर्धन ने इस अवसर पर अपना व्याख्यान दिया। 'हमें साहित्य क्यों पढ़ना चाहिए?' विषय पर उनका इरादा छात्रों को साहित्य और मानविकी के छात्रों के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) का उपयोग करने के तरीके, इसके उपयोग की चुनौतियों, साथ ही शिक्षण और सीखने में इसके खतरों से परिचित कराना था। उन्होंने सभागार में ही AI का प्रयोग कर सभी को दिखाया कि AI के माध्यम से कोई क्या—क्या कर सकता है। उन्होंने छात्रों को यह भी बताया कि एआई का नियंत्रित तरीके से सार्थक उपयोग कैसे किया जा सकता है और इसके खतरों से कैसे बचा जा सकता है। उन्होंने विभिन्न तरीकों पर भी चर्चा की जिनका उपयोग लिखते समय साहित्यिक चोरी, दोहराव और नकल से बचने के लिए किया जा सकता है।

इस अवसर पर पिछले वर्षों की भांति इस वर्ष भी संस्थान में दो दिवसीय समारोह का आयोजन किया गया। इसी क्रम में 13 सितंबर, 2024 को विभिन्न प्रतियोगिताओं का भी आयोजन किया गया, जैसे भाषण, सस्वर पाठ, निबंध—लेखन, स्वरचित कविता—पाठ आदि। इन प्रतियोगिताओं में संस्थान के लगभग 300 छात्रों ने भाग लिया। इसमें हिन्दी भाषा एवं साहित्य के नियमित विद्यार्थियों के अलावा विज्ञान एवं इंजीनियरिंग के विद्यार्थियों ने भी भाग लिया। भाषण प्रतियोगिता का विषय 'भारत में हिंदी भाषा का महत्त्व' था और निबंध लेखन के लिए दिया गया विषय 'शिक्षा के माध्यम के रूप में हिंदी' था। संस्थान के दोनों स्कूलों – प्रेम विद्यालय और आर.ई.आई. इंटर कॉलेज के छात्रों ने भी प्रतियोगिताओं में उत्साहपूर्वक भाग लिया। कार्यक्रम के संयोजक डॉ. बृजराज सिंह ने विजेताओं के नामों की घोषणा की। प्रेम विद्यालय की ज्योति सतसंगी व शशि तथा इंजीनियरिंग संकाय के छात्रों सुमिरन गुप्ता, राज सिंह व शिवांश लिखाड़ी को पुरस्कार स्वरूप एक—एक हजार रुपये की पुस्तकें व प्रमाण पत्र दिये गये। हिन्दी विभाग की अध्यक्षा प्रो. शर्मिला सक्सेना ने अतिथियों का स्वागत किया और 'हिन्दी दिवस' मनाने के महत्त्व पर अपने विचार व्यक्त किये। कला संकाय प्रमुख प्रोफेसर संगीता सैनी ने धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन शोध छात्रा रागिनी एवं इति ने किया।

संकाय समाचार

कला संकाय

छात्रोपलब्धियाँ

14 सितंबर, 2024 को कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी हिंदी एवं भाषा ज्ञानपीठ, डॉ. भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय, ब्रजक्षेत्र, आगरा द्वारा हिंदी दिवस पर एक पखवाड़े तक चलने वाला हिंदी महोत्सव आयोजित किया गया, जिसमें कई विश्वविद्यालयों ने भाग लिया। दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट के विद्यार्थियों ने भी इन प्रतियोगिताओं में बढ़—चढ़कर प्रतिभागिता की और अपनी उत्कृष्ट प्रस्तुतियों के लिए पुरस्कार प्राप्त किए। 4 सितंबर को 'क्विज प्रतियोगिता' में बी.ए तृतीय वर्ष की छात्रा पल्लवी ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। वहीं 5 सितंबर को आयोजित 'काव्य—वाचन' प्रतियोगिता में बी.ए द्वितीय वर्ष की छात्रा मानवी ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। 10 सितंबर को आयोजित 'एक्सटेम्पोर प्रतियोगिता' में भी मानवी द्वितीय स्थान पर रहीं। द्वितीय वर्ष की छात्रा दिव्यांशी ने द्वितीय स्थान अर्जित किया। 18 सितम्बर को आयोजित 'अन्त्याक्षरी' प्रतियोगिता में दोहे एवं कविता पाठ में प्रभावशाली प्रदर्शन के कारण बी.ए, एम.ए एवं बी.एड की छात्रा पल्लवी, भावना एवं बंदना ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। प्रतियोगिताओं के अंतिम चरण में 19 सितम्बर को भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता विषय पर आयोजित 'पोस्टर प्रतियोगिता' में बी.ए तृतीय वर्ष की छात्रा पल्लवी ने पुनः शानदार प्रदर्शन करते हुए द्वितीय स्थान प्राप्त किया। इसके अतिरिक्त, हिन्दी दिवस के अवसर पर संत रामकृष्ण कन्या महाविद्यालय, बल्केश्वर, आगरा में 'स्वरचित काव्य प्रतियोगिता' का आयोजन किया गया, जिसमें कला संकाय, हिन्दी विभाग की शोध छात्रा इति शिवहरे व बी.ए द्वितीय वर्ष की छात्रा मानवी ने प्रथम एवं द्वितीय पुरस्कार प्राप्त किया।

अभियांत्रिकी संकाय

स्मार्ट इंडिया हैकाथॉन 2024 के लिए डी.ई.आई में इंटरनल हैकाथॉन

स्मार्ट इंडिया हैकाथॉन (एस आई एच) एक प्रतिष्ठित राष्ट्रव्यापी पहल है जो छात्रों को रोजमर्रा की जिंदगी में आने वाली कुछ सबसे बड़ी चुनौतियों को हल करने में संलग्न करती है। नवाचार और व्यावहारिक समस्या—समाधान की संस्कृति को बढ़ावा देने के उद्देश्य से, एसआईएच छात्रों को वास्तविक दुनिया की समस्याओं के लिए अपने रचनात्मक समाधान विकसित करने और प्रदर्शित करने के लिए एक गतिशील मंच प्रदान करता है। यह हैकाथॉन प्रतिभागियों को अकादमिक ज्ञान और इसके व्यावहारिक अनुप्रयोग के बीच की खाई को पाटते हुए गंभीर और नवीन तरीके से सोचने के लिए प्रोत्साहित करता है।

एस आई एच 2024 के ग्रैंड फिनाले में प्रवेश के लिए राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिस्पर्धा करने के लिए दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट की टीमों को शॉर्टलिस्ट करने के लिए, 10 सितंबर, 2024 को आंतरिक मूल्यांकन किया गया था। कार्यक्रम का आयोजन इंजीनियरिंग संकाय द्वारा किया गया था। एस आई एच 2024 के लिए सिंगल पॉइंट ऑफ कॉन्टैक्ट (एस पी ओसी) के रूप में नामित डॉ. ए.चरण कुमारी ने डॉ.विशाखा बघेल और छात्र स्वयंसेवकों के साथ कार्यक्रम का समन्वय किया। इस जटिल मूल्यांकन प्रक्रिया में विश्वविद्यालय भर से कुल 65 टीमों ने भाग लिया। इन टीमों को 7 समूहों में विभाजित किया गया था, जिनमें से प्रत्येक समूह का मूल्यांकन आई टी उद्योग से एक बाह्य मूल्यांकनकर्ता और इंजीनियरिंग संकाय से एक आंतरिक मूल्यांकनकर्ता द्वारा किया गया था। इस मूल्यांकन के परिणामस्वरूप, 45 टीमों को शॉर्टलिस्ट किया गया और 5 टीमों को एस आई एच प्रोटोकॉल के अनुसार प्रतीक्षा सूची में रखा गया। ये टीमें अब राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिस्पर्धा करेंगी, जिसका लक्ष्य स्मार्ट इंडिया हैकाथॉन 2024 के ग्रैंड फिनाले में प्रवेश करना है।

डॉ. निरत सैनी के साथ एक संवाद सत्र

डी.ई.आई. के इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग विभाग द्वारा 5 सितंबर, 2024 को बी.टेक कंप्यूटर साइंस के अंतिम वर्ष के छात्रों के लिए डॉ. निरत सैनी के साथ एक संवाद सत्र आयोजित किया गया। कार्यक्रम का समन्वय डॉ. ए. चरण कुमारी ने किया। डी.ई.आई. के एक प्रतिभाशाली पूर्व छात्र, डॉ. सैनी वर्तमान में स्वायत्त ड्राइविंग तकनीक में विशेषज्ञता रखने वाली एक अमेरिकी कंपनी वेमो में एक शोध इंजीनियर हैं। डॉ. सैनी ने डी.ई.आई. (जहाँ उन्होंने कंप्यूटर विज्ञान में बीएससी, एमएससी और एमटेक की डिग्री हासिल की) से लेकर वेमो में अपनी वर्तमान भूमिका तक की अपनी प्रेरक यात्रा साझा की। उन्होंने चुनौतियों पर काबू पाने में डी.ई.आई. में विकसित कौशल और मूल्यों के महत्व पर चर्चा की, जैसे कि स्वतंत्र रूप से प्रबंधन करना, सांस्कृतिक अनुकूलन और वित्तीय बाधाएँ। डॉ. सैनी ने छात्रों को निरंतर दृढ़ता बनाए रखने, रणनीतिक रूप से योजना बनाने और चुनौतियों के अनुकूल होने के लिए प्रोत्साहित किया, जिससे शैक्षणिक और व्यावसायिक सफलता प्राप्त करने में मूल्यवान अंतर्दृष्टि मिली।

विज्ञान संकायः

शिक्षकोप्लब्धिः

भौतिकी और कंप्यूटर विज्ञान विभाग के अध्यक्ष प्रोफेसर सुखदेव रॉय ने स्विस नेशनल साइंस फाउंडेशन (एस एन एस एफ) के निमंत्रण पर एक शोध प्रस्ताव की समीक्षा की, जिसे स्पार्क फंडिंग योजना के तहत प्रस्तुत किया गया था, जिसका उद्देश्य नवीन और अकल्पनीय वैज्ञानिक दृष्टिकोणों का परीक्षण करने में सक्षम बनाना है।

रसायन विज्ञान विभाग की सहायक प्रोफेसर डॉ. मंजू श्रीवास्तव को प्रेस्टीजियस इंस्पिरेशनल नेशनल टीचर अवार्ड 2024 से सम्मानित किया गया है।

सामाजिक विज्ञान संकायः

शिक्षकोप्लब्धिः

प्रो. सुमिता श्रीवास्तव, प्रबंधन विभाग, सामाजिक विज्ञान संकाय ने 23 अगस्त से 27 अगस्त, 2024 तक नोरबुलिंग राइटर कॉलेज, (रॉयल यूनिवर्सिटी ऑफ भूटान), पारो, भूटान में आयोजित स्थिरता और जीवन कौशल के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता को अपनाने पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में सत्राध्यक्षता की। यह कार्यक्रम एमजेपी रोहिलखंड विश्वविद्यालय, बरेली द्वारा रॉयल यूनिवर्सिटी ऑफ भूटान और इंडो–गल्फ मैनेजमेंट एसोसिएशन (आई जी एम ए), यू.ए.ई. और जॉन कैरोल यूनिवर्सिटी, यू.एस.ए. सहित अन्य शैक्षणिक भागीदारों की सहभागिता में आयोजित किया गया था।

इसी संगोष्ठी में, सुश्री पूजा केवलरमानी, शोध छात्रा, प्रबंधन विभाग, डॉ. जसप्रीत कौर, सहायक प्रोफेसर, प्रबंधन विभाग और प्रो. सुमिता श्रीवास्तव को उनके शोध पत्र ''Developing a Conceptual Framework for Success of AI-Based Start-ups: A Qualitative Analysis'' के लिए 'बेस्ट पेपर अवार्ड' से सम्मानित किया गया।

टेक्निकल कॉलेजः

शिक्षकोपलब्धिः

श्री मयंक कुमार अग्रवाल, इंजीनियरिंग विभाग के व्याख्याता को 2050 आवेदकों में से ए आई सी टी ई द्वारा तीसरे वर्ष के डिप्लोमा इंजीनियरिंग 6वें सेमेस्टर पाठ्यक्रम के लिए ए आई सी टी ई तकनीकी पुस्तक लिखने के लिए चुना गया है। पुस्तक का शीर्षक 'प्रोडक्शन एण्ड ऑपरेशंस मैनेजमेंट' है। उन्होंने पुस्तक का अंग्रेजी संस्करण लिखा है, जिसका आरंभ में 12 भारतीय भाषाओं में अनुवाद किया जाना है और भविष्य में 22 अन्य भारतीय भाषाओं में अनुवाद किए जाने की उम्मीद है। इसके लिए उन्हें 1.5 लाख रुपये का मानदेय मिला। ए आई सी टी ई के निदेशक (टी एंड एलबी) डॉ. सुनील लूथरा ने निर्धारित समय के अंदर इस परियोजना को सफलतापूर्वक पूरा करने के लिए श्री मयंक अग्रवाल की सराहना की। ए आई सी टी ई ई–कुंभ पोर्टल के माध्यम से छात्र इस पुस्तक को निःशुल्क प्राप्त कर सकते हैं।

डी.ई.आई प्रेम विद्यालय गर्ल्स इंटरमीडिएट कॉलेज

छात्रोपलब्धियाँः

- कक्षा सातवीं की सुश्री दृष्टि दुबे ने 2–4 अगस्त, 2024 को राजीव गांधी पोर्ट इंडोर स्टेडियम, विशाखापत्तनम, आंध्र प्रदेश में आयोजित चौंपियनशिप में महिला कैडेट समूह श्रेणी में भाग लिया। यह कार्यक्रम आंध्र प्रदेश ताइक्वांडो एसोसिएशन द्वारा आयोजित किया गया था। 24 राज्यों की भागीदारी के साथ, सुश्री दुबे ने 8वां स्थान हासिल किया।
- डी.ई.आई. प्रेम विद्यालय की छात्राओं ने 3 सितंबर, 2024 को कन्हैयालाल–माणिकलाल मुंशी हिंदी तथा भाषा विज्ञान विद्यापीठ में उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान द्वारा आयोजित जनपद स्तरीय संस्कृत प्रतिभा खोज कार्यक्रम में उत्साहपूर्वक प्रतिभागिता की। विभिन्न विद्यालयों के कई छात्रों ने गायन, भाषण और संस्कृत भाषा के सामान्य ज्ञान में अपने कौशल का प्रदर्शन किया। डी.ई. आई. प्रेम विद्यालय की छात्राओं ने विभिन्न श्रेणियों में कई पदक जीतकर उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। परिणाम इस प्रकार रहे; 'संस्कृत गीत गायन' में कक्षा 12 की सुश्री अंतरा लालोरिया ने प्रथम स्थान प्राप्त किया, कक्षा 7 की सुश्री दृष्टि ने दूसरा स्थान प्राप्त किया, तथा कक्षा 8 की सुश्री बिनती ने तीसरा स्थान प्राप्त किया। 'संस्कृत वाचन' में कक्षा 11 की नैना मित्तल ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। 'संस्कृत सामान्य ज्ञान' में कक्षा 11 की सुश्री अंशिका गोयल ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।

खण्ड 'ख' : डी.ई.आई. ऑनलाइन और दूरस्थ शिक्षा

कोऑर्डिनेटर की डेस्क से

न्यूज़लेटर के फरवरी 2024 संस्करण में मैंने भारत में कोचिंग सेंटरों के बारे में लिखा था और बताया था कि सरकार स्पष्ट रूप से मानती है कि समाज ने कोचिंग संस्कृति को स्वीकार कर लिया है जिसके परिणामस्वरूप माध्यमिक विद्यालय स्तर पर शिक्षा की प्रासंगिकता में कमी आई है। सरकार ने हो रहे नुकसान को कम करने के लिए प्रयास शुरू कर दिए हैं। कोचिंग सेंटरों के लिए दिशानिर्देश जारी किए गए। इसके साथ ही छात्रों पर परीक्षाओं के बोझ को कम करने के लिए कई कदम उठाए गए हैं जैसे प्रवेश के लिए सामान्य विश्वविद्यालय प्रवेश परीक्षा (CUET) यू जी / पी जी डिग्री कार्यक्रम में प्रवेश प्राप्त करने के लिये इत्यादि।

इस पृष्ठभूमि में, मेरे समाचार पत्र (टाइम्स ऑफ इंडिया, 3 सितंबर, 2024) के संपादकीय पृष्ठ पर एक लेख में शिव नादर इंस्टीट्यूशन ऑफ एमिनेंस के गणित के प्रोफेसर अंबर हबीब द्वारा की गई निम्नलिखित टिप्पणियों को पढ़ना काफी आश्चर्यजनक था जिनमें से कुछ अंश नीचे पुनः प्रस्तुत हैं:

''....साथ ही, सभी दाखिलों को मुट्ठी भर केंद्रीकृत प्रवेश परीक्षाओं के माध्यम से करने की मुहिम लगभग हर स्कूली छात्र को कोचिंग उद्योग की ओर जाने के लिए मजबूर कर रही है। यह तब है जब आईआईटी के लिए संयुक्त प्रवेश परीक्षा का भारत में विज्ञान शिक्षा पर लंबे समय से बुरा प्रभाव पड़ा है। पिछले कुछ वर्षों में, हमारे छात्रों को समाधान(Solution) पुस्तिकाओं को याद करने के पक्ष में वैचारिक(Conceptual) समझ और रचनात्मकता को छोड़ना पड़ा है।''

''जब आई आई टी ने कोचिंग संस्थानों की तुलना में कठिन प्रश्न तैयार करने की रणनीति अपनाई, तो यह आत्मघाती साबित हुआ। क्योंकि कोचिंग के बिना छात्रों के लिए सफल होना और भी मुश्किल हो गया। फिर भी, कोचिंग प्रभावी रूप से इंजीनियरिंग और चिकित्सा जैसी व्यावसायिक धाराओं तक ही सीमित थी।''

''कॉमन यूनिवर्सिटी एंट्रेंस टेस्ट(CUET) को जबरन अपनाए जाने से यह दीवार ढह गई है। CUET सभी विषयों को कवर करता है और केवल बहुविकल्पीय प्रश्नों का उपयोग करता है।''

'' CUET के तीन साल के अनुभव से हम देखते हैं कि यह तथ्यों को याद करने से ज़्यादा कुछ नहीं परखता है, और अक्सर कम महत्व वाले अस्पष्ट तथ्यों के लिए परीक्षण करता है। इस प्रकार, यह स्कूली शिक्षा को अनिवार्य रूप से अगले स्तर पर एक छात्र के प्रवेश के लिए अप्रासंगिक बना देता है। हमारे छात्रों को संकीर्ण प्रशिक्षण के लिए एक rounded शिक्षा को छोड़ने के लिए मजबूर होना पड़ता है। यह प्रशिक्षण उनमें से कुछ को उनके पसंदीदा संस्थानों में तो ले जाता है, लेकिन उन सभी को उन सामान्य कौशल से वंचित कर देता है जो विश्वविद्यालय में सफलता के लिए आवश्यक हैं। विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम के चल रहे कमजोर पड़ने के साथ, यह कोचिंग के दूसरे चरण के लिए एक फीडर(feeder) बनाता है।''

'राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020' के पैरा 4.36 में माध्यमिक विद्यालय परीक्षाओं और प्रवेश परीक्षाओं की वर्तमान प्रकृति की बहुत आलोचना की गई है और कहा गया है कि आज की कोचिंग संस्कृति के साथ–साथ ये बहुत नुकसान पहुंचा रही हैं, खासकर माध्यमिक विद्यालय स्तर पर।

इस पृष्ठभूमि में, यह इंगित करना सार्थक है कि यूनेस्को ने एस डी जी 4 (गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा) का एक बहुत विस्तृत स्कोरकार्ड जारी किया है जिसमें उन्होंने बताया है कि भारत उच्च माध्यमिक शिक्षा को पूरा करने में संघर्ष करता है जो कथित तौर पर केवल 51% है और यह कई मध्यम आय वाले देशों से कम है। माध्यमिक शिक्षा के अंत तक छात्रों का समर्थन करने के लिए लक्षित हस्तक्षेप की आवश्यकता है।

यह उल्लेखनीय है कि यू.एस.ए. के नेशनल एकेडमी ऑफ साइंसेज की अध्यक्षा मार्सिया मैकनट ने अपने हालिया 'स्टेट ऑफ द साइंस' संबोधन में इस बात पर दुख जताते हुए कि अमेरिका अपने वैश्विक वैज्ञानिक नेतृत्व को अन्य देशों को सौंप रहा है, इस बात पर जोर दिया कि इस गिरावट को रोकने के लिए के जी और 12वीं कक्षा के बीच आधारभूत STEM शिक्षा को मजबूत करने पर

अत्यधिक ध्यान देने की आवश्यकता है [1]।

भारत में शिक्षा केंद्र और राज्य सरकारों की समवर्ती जिम्मेदारी है। 65 स्कूल बोर्ड और कोचिंग सेंटर संस्कृति के साथ, माध्यमिक शिक्षा प्रणाली बहुत जटिल हो गई है और इसे कोचिंग संस्कृति से दूर ले जाने और वैचारिक समझ को बढ़ावा देने के लिए बड़े बदलाव की आवश्यकता है।

(प्रो. वी.बी. गुप्ता)

संदर्भः

[1] S.S. Iqbal, Scientific American, August 7, 2024

उच्च शिक्षा संस्थानों में प्लेसमेंट (Placement) का परिदृश्य

यह खबर कि ''आई आई टी बॉम्बे जैसा एक hollowed Institution इस वर्ष (2024) कैंपस भर्ती प्रक्रिया के माध्यम से अपने छात्रों में से केवल 75% को ही नौकरी दिलवा पाया है'' ने उच्च शिक्षा के प्रभारी रहे दो शीर्ष पूर्व अधिकारियों द्वारा निम्नलिखित अवलोकन को जन्म दिया [1] ''यदि आई आई टी बॉम्बे भी अपने सभी स्नातकों के लिए नौकरी नहीं ढूँढ़ सकता है, तो हर साल 10 मिलियन (1 करोड़) स्नातकों के लिए यह खबर और भी बुरी है। उद्योग धीमे हो रहे हैं और आज के कौशल की शेल्फ–लाइफ लगभग 3 साल है''। उनके द्वारा की गई कुछ अन्य उल्लेखनीय टिप्पणियाँ नीचे प्रस्तुत की जा रही हैं:

- आई आई टी बॉम्बे में 543 कंपनियों ने प्लेसमेंट के लिए पंजीकरण कराया, जिसमें से केवल 388 ने भाग लिया और 364 ने ऑफर दिए। बाकी का क्या हुआ?
- यह भारत के प्रमुख संस्थानों में से एक का परिदृश्य है। यह तब और भी बदतर हो जाता है जब कोई नए आई आई टी, एन आई टी, विश्वविद्यालयों और देश भर में ऊग आए असंख्य अन्य संस्थानों पर विचार करते हैं। यह आश्चर्यजनक नहीं है क्योंकि ऐसे अधिकांश संस्थानों में केवल लगभग 30% छात्र ही रोजगार के योग्य पाए जाते हैं।
- भारत में हर साल लगभग 1.5 मिलियन इंजीनियर और 8.5 मिलियन नियमित स्नातक (बी ए, बी.कॉम, बी एस सी, बी बी ए और अन्य डिग्री) निकलते हैं, यानी कुल मिलाकर 10 मिलियन स्नातक। क्या उनके लिए पर्याप्त नौकरियाँ हैं?
- यह पूछा जा सकता है कि क्या हमारे प्रमुख संस्थानों और विश्वविद्यालयों को प्लेसमेंट पर ध्यान देना चाहिए। क्या दुनिया में कहीं भी कोई विश्वविद्यालय नौकरी की गारंटी देता है? समस्या यह है कि भारत में संस्थान परंपरागत रूप से अपने प्रतिद्वंद्वियों से खुद को अलग दिखाने के लिए अपने प्लेसमेंट के आंकड़ों को बढ़ा–चढ़ाकर बताते हैं। और यही कारण है कि प्लेसमेंट के आंकड़ों और गुणवत्ता में गिरावट निश्चित रूप से सुर्खियाँ बनती है।
- तीन क्षेत्र हैं जो रोजगार पैदा करते हैं। प्राथमिक रोजगार क्षेत्र, जो खाद्य पदार्थों और खनिजों जैसे पृथ्वी के उत्पादन पर निर्भर करता है, में लगभग 15% रोजगार पैदा करने की क्षमता है। द्वितीयक क्षेत्र, या विनिर्माण (manufacturing) लगभग 35% रोजगार पैदा कर सकता है। और तृतीयक या सेवा (Service) क्षेत्र शेष 50% के लिए जिम्मेदार है।
- वर्तमान रुझान एक व्यापक चरण को दर्शाते हैं जहां उद्योग धीमे हो रहे हैं या पुनर्गठन कर रहे हैं। इनसे नए स्नातक सबसे अधिक प्रभावित होंगे। आज के कौशल की शेल्फ–लाइफ लगभग तीन साल है। इसलिए, नए स्नातकों को उद्योग के रुझानों से अवगत रहने और उभरती मांगों के साथ तालमेल बिठाने के लिए अपने कौशल को लगातार अपडेट करने की आवश्यकता है।

लेखक मानते हैं कि उनके द्वारा उठाए गए मुद्दे भारत में रोजगार सृजन में कमी से अधिक संबंधित हो सकते हैं। 3 सितंबर, 2024 के टाइम्स ऑफ इंडिया के संपादकीय में 'काम के लिए मरना' शीर्षक के तहत हमें बताया गया है कि बेरोजगारी की समस्या निम्न उदाहरण से स्पष्ट है – 3,700 पी एच डी धारकों ने यू पी पुलिस में चपरासी के पद के लिए आवेदन किया, जिसके लिए योग्यता मानदंड वर्ग 5 था। संपादक हमें आगे बताते हैं:

भारत के लगभग 65% कार्यबल (Workforce) की आयु 35 वर्ष से कम है। केवल 2% कुशल (Skilled) हैं और 2 में से 1 कॉलेज के तुरंत बाद नौकरी पाने योग्य नहीं है। मैकिन्से (Mckinsey) की रिपोर्ट का अनुमान है कि 2030 तक भारत में अनुमानित 90 मिलियन नई 'नौकरियों' में से 70% ब्लू–कॉलर काम में होंगे। इसका एक बड़ा हिस्सा लॉजिस्टिक्स, वेयरहाउसिंग और गिग इकॉनमी में होगा। (गिग इकॉनमी एक मुक्त बाजार प्रणाली है जिसमें अस्थायी पद आम हैं और संगठन अल्पकालिक प्रतिबद्धताओं के लिए स्वतंत्र श्रमिकों को काम पर रखते हैं। ''गिग'' शब्द बोलचाल की भाषा में एक ऐसी नौकरी के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला शब्द है जो एक निश्चित अवधि तक चलती है।)

संकलित एवं संयोजित

— प्रो. वी बी गुप्ता, समन्वयक, डी.ई.आई.–डी.ई.पी.

संदर्भ:

[1] S.S. Mantha (ex-Chairman, AICTE) and Ashok Thakur (ex-Secretary, MHRD), Why the India Placement Story has turned Sour, The Times of India, September 5, 2024.

केन्द्रों से समाचार

करोल बाग और मुरार केंद्रों पर स्वतंत्रता दिवस समारोह

करोल बाग सेंटर में स्वतंत्रता दिवस कार्यक्रम की शुरुआत ध्वजारोहण से हुई, उसके बाद राष्ट्रगान और स्काउट गीत गाया गया। इसके बाद मार्च पास्ट हुआ और नारे लगाए गए। स्टाफ सदस्य ने स्वतंत्रता दिवस और भारत के संविधान पर एक आकर्षक भाषण दिया, जिसने सभी उपस्थित लोगों को मंत्रमुग्ध कर दिया। कार्यक्रम में बच्चों और पूर्व छात्रों द्वारा एक संक्षिप्त सांस्कृतिक प्रदर्शन भी किया गया। कार्यक्रम का समापन सेंटर इंचार्ज के एक प्रेरक भाषण के साथ हुआ, जिन्होंने युवाओं को महान राष्ट्र के जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए प्रोत्साहित किया।

डी.ई.आई. के मुरार सेंटर में स्वतंत्रता दिवस बड़े उत्साह और जोश के साथ मनाया गया। कैंपस में छात्रों, मेहमानों, अभिभावकों और स्थानीय लोगों की भारी भीड़ उमड़ी। कार्यक्रम की शुरुआत सुबह 8:30 बजे डी.ई.आई., दयालबाग़, आगरा से लाइव प्रसारण के साथ हुई। छात्रों द्वारा एक लघु सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया जिसमें एक समूह गान, अंग्रेजी में भाषण, एक देशभक्ति गीत और एक कविता पाठ शामिल था। अंत में, उपस्थित सभी लोगों को हल्का जलपान परोसा गया। समारोह के दौरान लोगों ने कोविड प्रोटोकॉल, मास्क, हेलमेट और सोशल डिस्टेंसिंग का सख्ती से पालन किया।

लुधियाना, जालंधर और भोपाल केंद्रों पर शिक्षक दिवस समारोह

5 सितंबर, 2024 को डी.ई.आई. सूचना केंद्र, लुधियाना में शिक्षक दिवस मनाया गया। इस अवसर पर विभिन्न पाठ्यक्रमों के सभी शिक्षक और छात्र उपस्थित थे। कार्यक्रम की शुरुआत विश्वविद्यालय प्रार्थना और विश्वविद्यालय गीत से हुई। इसके बाद, केंद्र प्रभारी ने वीडियो के माध्यम से शिक्षा में आध्यात्मिकता और मूल्यों के महत्व पर प्रकाश डालते हुए अपना भाषण दिया, जिसमें डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन की जीवनी और राधा स्व आ मी फेथ, दयालबाग़ के संत सतगुरुओं (महान शिक्षकों) का परिचय भी शामिल था। इसके बाद केंद्र के प्रत्येक छात्र ने शिक्षकों को शुभकामना देने के लिए मंच पर आकर कार्यक्रम का समापन किया। अंत में, सभी को नाश्ता परोसा गया।

जालंधर सेंटर में ड्रेस डिज़ाइनिंग और टेलरिंग के विद्यार्थियों ने शिक्षक दिवस को बड़े उत्साह के साथ मनाया। सेंटर इंचार्ज और मेंटर्स को सम्मान और कृतज्ञता के प्रतीक के रूप में फूलों का गुलदस्ता भेंट किया गया। विद्यार्थियों ने आदर्श समाज बनाने में शिक्षकों की भूमिका के बारे में बात की। सेंटर इंचार्ज श्री बलबीर सिंह चीमा ने इस प्रयास की सराहना की और 'शिक्षक और शिष्य' के रिश्ते के महत्व को समझाया। मेंटर्स श्रीमती आशा और श्रीमती उषा रानी ने एक प्रार्थना का पाठ किया, जबकि मेंटर्स श्रीमती उमा शर्मा और श्रीमती सुधा लवली ने जीवन का सामना करने में शिक्षा की भूमिका और डी.ई.आई. नीति के तहत कौशल सीखने के महत्व पर चर्चा की, जो विद्यार्थियों के समग्र व्यक्तित्व को संवारने में मदद करती है।

भोपाल केंद्र में छात्रों ने शिक्षकों के लिए एक विशेष कार्यक्रम आयोजित किया। इस कार्यक्रम में सात संकाय सदस्य मौजूद थे। कार्यक्रम की शुरुआत प्रार्थना से हुई। छात्र संकाय सदस्यों के लिए टीका और फूल लेकर आए थे। उन्होंने शिक्षकों के काम की प्रशंसा की और शिक्षकों से मिली प्रेरणा को साझा किया।

खण्ड 'ग' : डी.ई.आई के पूर्व छात्र (AADEIs & AAFDEI)

संपादक की डेस्क से

अंग्रेजी, जिसे एक अंतरराष्ट्रीय भाषा का दर्जा प्राप्त है, विभिन्न संस्कृतियों को एक साथ लाती है। भारत जैसे विविधतापूर्ण देश में, संपर्क भाषा के रूप में अंग्रेजी का महत्व इसे लगभग अस्तित्व की भाषा बनाता है। 'अंग्रेजी कोई भी?', शीर्षक वाला लेख, यह रोचक ढंग से इसे साबित करता है और यह भी सुझाव देता है कि किस प्रकार हम अपने युवा शिक्षार्थियों को अंग्रेजी का व्यावहारिक ज्ञान दे सकते हैं।

AAFDEI के सदस्यों की ओर से अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर युवा स्नातकों को सहायता प्रदान करने, सांस्कृतिक कार्यक्रम और सेमिनार आयोजित करने के रूप में और भी अच्छे कार्य सामने आते हैं। AADEIs और AAFDEI अपने मिशन के प्रति निरंतर काम करते हुए पोषण और समर्थन करना जारी रखते हैं..., ''....दयालबाग शैक्षणिक संस्थानों की मूल्य प्रणाली का शैक्षणिक समुदाय में प्रसार विशेष रूप से मानवता की सेवा के आदर्शों से पूरे समुदाय को परिचित कराना....''।

हम अपने पाठकों को aadeisnewsletter@gmail.com पर अपने विचार साझा करने के लिए आमंत्रित करते हैं और उनसे सुनने के लिए उत्सुक हैं!

अंग्रेजी कोई भी?

सीमा स्वामीप्यारी संधीर

कला स्नातक (1984 बैच), डी.ई.आई.

ई ए एल (अतिरिक्त भाषा के रूप में अंग्रेजी) शिक्षक (सेवानिवृत्त),

अमेरिकन इंटरनेशनल स्कूल चेन्नई

मुंबई में जन्मी और ऐसे स्कूल में पढ़ीं जहाँ शिक्षक और छात्र केवल अंग्रेजी भाषा में ही संवाद करते थे, मैंने कभी नहीं सोचा था कि स्कूल में लोग दूसरी भाषाएँ भी बोल सकते हैं। मेरे लिए, यह सिर्फ घर पर ही था, जहाँ हम अलग–अलग भाषाएँ बोलते थे। जब भी हम दयालबाग़ जाते थे, और जब मैं छोटी बच्ची थी तो डब्ल्यू टी सी जाती थी, तो वहां के अध्यापक भी मुझसे अंग्रेजी में बात करते थे।

जैसे–जैसे मैं बड़ी हुई, मैंने पाया कि अंग्रेजी सीखना आसान नहीं था। फिर भी, मुझे तब तक अंग्रेजी सीखने की चुनौतियों का एहसास नहीं हुआ, जब तक कि मैंने 12वीं कक्षा में प्रेम विद्यालय में दाखिला नहीं ले लिया, और इंटरमीडिएट परीक्षा की तैयारी शुरू नहीं कर दी। वास्तव में, यह कोई आसान काम नहीं था। कठिन हिंदी के अलावा, मुझे संस्कृत से भी जूझना पड़ा। लेकिन मुझे भरोसा था कि मैं कम से कम अंग्रेजी में तो अच्छा कर लूंगी। मैंने निश्चित रूप से वास्तविक परिणामों की उम्मीद नहीं की थी। मुझे अपना शुरुआती झटका याद है मैंने (पी वी में अंग्रेजी माध्यम की कुछ लड़कियों में से एक होने के नाते) अंग्रेजी भाषा में सबसे कम अंक प्राप्त किए। वास्तव में, मुझे लगता है कि मैंने संस्कृत और हिंदी में बहुत अधिक अंक प्राप्त किए।

युवा होने और चिंतनशील न होने के कारण, मैंने परिणामों के बारे में नहीं सोचा। वास्तव में, मुझे तब आश्चर्य हुआ जब मैंने दूसरों को यह कहते सुना, ''मेरे माता–पिता ने हमें अंग्रेजी माध्यम के स्कूल में भेजने के लिए बहुत त्याग किया।'' निश्चित रूप से, लोगों ने कड़ी मेहनत की अपने परिवारों के लिए, लेकिन अपने बच्चों को अंग्रेजी स्कूल में भेजने के लिए त्याग करें? मैं हैरान थी।

विश्वविद्यालय में मेरे छात्र वर्षों के दौरान, और बाद में, गैर–अंग्रेजी पृष्ठभूमि वाले छात्रों के शिक्षक के रूप में, चीजें स्पष्ट हो गईं।

पारंपरिक शिक्षण विधियों के विपरीत भाषा में शिक्षण का अंतर स्पष्ट हुआ।

अंग्रेजी जैसी भाषा सीखना, जहाँ हर व्याकरण नियम में विरोधाभास प्रतीत होता है, बहुत कठिन है और आसानी से धाराप्रवाह होने के लिए अनुकूल नहीं है। लोग अक्सर मुझसे पूछते हैं कि वे इसे सबसे अच्छे तरीके से कैसे सीख सकते हैं। मेरा जवाब है – immersion जिसका शाब्दिक अर्थ है इसके द्वारा चारों ओर से घिरा होना। अंग्रेजी से परिचित होने से कहीं अधिक, immersion में बिना किसी दबाव के उसमें सक्रिय रूप से शामिल होना शामिल है। हालाँकि, यहाँ एक समस्या है! immersion के माध्यम से, हम भाषा में लगातार आत्मविश्वास हासिल करते हैं। आत्मविश्वास महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह हमारे कौशल को परीक्षण और हमारी शब्दावली के विस्तार को साहस प्रदान करता है। फिर भी, जितना अधिक आत्मविश्वास हम प्राप्त करते हैं, उच्चारण की शुद्धता और सही व्याकरण पर हमारा ध्यान उतना ही कम होता जाता है। हम अपनी आवाज सुनने में इतने सहज हो जाते हैं कि हम खुद को सुधारने में असमर्थ हो जाते हैं। इसलिए, हमें खुद को सुधारने की जरूरत है। हमें सही माहौल ढूँढ़ना चाहिए, जिसमें हम भाषा में पूरी तरह डूब सकें। ऐसा माहौल जहाँ कुशल वक्ता हों जो जरूरत पड़ने पर हमारी सीखने की प्रक्रिया में मदद कर सकें। और बेशक, हमें अपनी भाषा को उसके अनुसार समायोजित करने के लिए तैयार रहना चाहिए।

जबकि गैर–अंग्रेजी स्कूलों में immersion आसान नहीं है, शिक्षक कई रणनीतियों को अपना सकते हैं। वे अपनी कक्षा के लिए 'केवल अंग्रेजी नीति' रख सकते हैं और समझ को बढ़ावा देने के लिए मूल भाषा पर निर्भरता कम कर सकते हैं। कहानियों, इशारों, खेलों आदि का अभिनय/पुनःकथन छात्रों को सक्रिय रूप से शामिल करने के लिए ये बहुत प्रभावी हैं। परिणामस्वरूप, छात्रों की रुचि, ध्यान और सीखने की क्षमता में वृद्धि होती है।

मुझे याद है जब मेरी भतीजी ने पहली बार स्कूल जाना शुरू किया था, तो वह अंग्रेजी का एक शब्द भी नहीं बोल पाती थी। अंग्रेजी भाषा में डूबना पहले दिन से ही शुरू हो गया था। एक मौखिक बच्ची होने के नाते, वह भाषा के साथ प्रयोग करने में संकोच नहीं करती थी। घर पर, उसने टेलीविज़न पर अंग्रेजी कार्टून देखना शुरू कर दिया। जल्द ही, हमारा छोटा सा बकबक करने वाला बच्चा आसानी से दो भाषाओं के बीच स्विच करने लगा।

अंग्रेजी सीखने में रुचि रखने वाले व्यक्तियों को कुशल वक्ताओं को ध्यान से सुनना चाहिए, खूब पढ़ना चाहिए, अच्छे अंग्रेजी शो देखने चाहिए और जानबूझकर अपनी शब्दावली बनाने पर काम करना चाहिए। नए शब्दों का बार–बार इस्तेमाल करने से उन्हें आत्मसात करने में मदद मिलती है। इसमें समय, परिश्रम और साहस लगता है, लेकिन यह आश्चर्यजनक है कि कैसे जब हम उसे ऐसा करने देते हैं तो मानव मस्तिष्क बहुत ही खूबसूरती से नई चीजें सीख लेता है! आखिर, क्या हमने मास पीटी के दौरान सिर्फ सुनकर और उन्हें दोहराकर ही इतने सारे नए संस्कृत शब्द नहीं सीखे हैं? और यह सब, संस्कृत में किसी औपचारिक निर्देश के बिना।

दयालबाग शैक्षणिक संस्थान के पूर्व छात्र एवं मित्र संघः कार्यक्रम रिपोर्ट

एसोसिएशन ऑफ एलुमनाई एंड फ्रेंड्स ऑफ दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (AAFDEI) 2009 से आंतरिक राजस्व सेवा अधिनियम 1986 के अनुसार पंजीकृत 501(c)(3) गैर–लाभकारी संगठन के रूप में काम कर रहा है। 2020 से, पूर्व छात्र प्लेसमेंट सहायता सैल (APAC) उत्तरी अमेरिका में समुदाय के सदस्यों को करियर विकास सहायता प्रदान कर रहा है। इसके अलावा, AAFDEI-APAC भारत में उन उम्मीदवारों की सहायता करता है जो यू एस ए में स्थानांतरित हो रहे हैं। AAFDEI-APAC सदस्यों को करियर विकास सलाह प्राप्त करने के लिए मासिक वर्चुअल सत्र आयोजित करता है। AAFDEI – APAC विभिन्न उद्योगों में नौकरी के अवसर की पहचान, रेफरल, साक्षात्कार की तैयारी आदि जैसे क्षेत्रों में सहायता करता है।

समय–समय पर, AAFDEI-APAC द्वारा विभिन्न विषयों में सेमिनार भी आयोजित किए जाते हैं। अप्रैल 2024 में, अवि बोपन्ना ने एक सेमिनार दिया "ए आई में उद्यमिता" और अपने अनुभवों पर चर्चा की, ए आई से संबंधित स्टार्टअप की स्थापना की, जिसके परिणामस्वरूप अधिग्रहण के माध्यम से सफल विकास हुआ।

AAFDEI के सदस्यों को मार्च 2024 में यह अवसर भी मिला कि वे यू.के. के सदस्यों के साथ मिलकर एक सांस्कृतिक प्रदर्शन की तैयारी करें और जिसे सिंगापुर क्षेत्र में वर्चुअल ई–सतसंग के माध्यम से कृषि विभाग में फील्डवर्क के शाम के सत्र के दौरान दयालबाग़ के खेतों में, परम पूज्य गुरुदेव हुज़ूर प्रोफेसर प्रेम सरन सतसंगी साहब जी की उपस्थिति में प्रसारित किया गया।

AAFDEI पाठ्यक्रम सामग्री के विकास में DEI की सहायता भी करता है। AAFDEI ने हाल ही में परियोजना प्रबंधन पर एक पाठ्यक्रम में विषय वस्तु विशेषज्ञों के एक समूह को इकट्ठा करना शुरू किया है। क्लिनिकल बायोकेमिस्ट्री में एक कोर्स के लिए भी इसी तरह के प्रयास चल रहे हैं।

पाठकों का कोना

अगस्त अंक लेख और कविता पर विचार,

अर्पित माथुर
(बी.टेक. – मैकेनिकल इंजीनियरिंग), बैचः 2012–2016, डी.ई.आई.
वर्तमान में, प्रबंधक – सेवा संवर्धन, सेवा योजना,
यामाहा मोटर इंडिया सेल्स प्राइवेट लिमिटेड, चेन्नई

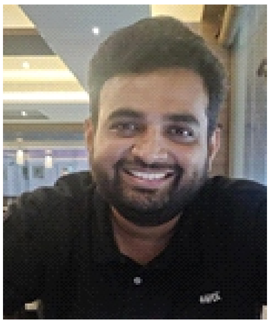

दोनों लेखों के लेखक इस बात पर गहराई से विचार करते हैं कि दयालबाग़ शैक्षणिक संस्थान में बिताए समय ने उनके शैक्षणिक और व्यक्तिगत विकास को किस प्रकार प्रभावित किया।

मोहित सतसंगी की सिस्टम दृष्टिकोण पर चर्चा इस बात पर प्रकाश डालती है कि कैसे डी.ई.आई. की शिक्षाओं का सिस्टम इंजीनियरिंग में उनके काम पर स्थायी प्रभाव पड़ा है, जिससे संस्था के दीर्घकालिक प्रभाव का पता चलता है। वह समग्र शिक्षा, श्रम की गरिमा और शिक्षकों के सहायक समुदाय के महत्व पर भी जोर देते हैं। संत कबीर की कविता पढ़ाने पर गुरप्यारी भटनागर का लेख भक्ति साहित्य की परिवर्तनकारी शक्ति के बारे में मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान करता है, जिससे छात्रों को अपनी प्रारंभिक गलत धारणाओं से आगे बढ़कर संत कबीर के काम से अधिक सार्थक रूप से जुड़ने में मदद मिलती है।

प्रिया सिंह की कविता, 'परम सत्य' न्याय, करुणा और लचीलेपन के विषयों को छूती है। लयबद्ध छंदों के माध्यम से, वह एक शक्तिशाली प्रतिध्वनि के साथ एकता और शांति की आवश्यकता पर जोर देती हैः 'विश्वास रखें, सत्य की जीत होगी।'

ये लेख वास्तव में DEI की शिक्षा प्रणाली और मूल्यों के अपने समुदाय के जीवन और करियर को आकार देने में स्थायी प्रभाव को उजागर करते हैं। एक पाठक और एक पूर्व छात्र के रूप में, मुझे DEI में अपने दिनों की याद आती है। और मुझे यकीन है, दो लेख और ये कविता न केवल मेरे मूल्यों और सिद्धांतों के साथ प्रतिध्वनित होती हैं, बल्कि कई अन्य पाठकों और पूर्व छात्रों के साथ भी, जिन्होंने इन रचनाओं का आनंद लिया होगा।

प्रकाशन समितियाँ / सम्पादकीय बोर्ड

डी.ई.आई.

संरक्षक

प्रो. सी. पटवर्धन

मुख्य संपादक

प्रो. जे.के. वर्मा

संपादक

डॉ. सोना दीक्षित

डॉ. सोनल सिंह

डॉ. अक्षय कुमार सत्संगी

डॉ. बानी दयाल धीर

सदस्य

डॉ. चारु स्वामी

डॉ. नेहा जैन

डॉ. सौम्या सिन्हा

श्री आर.आर. सिंह

प्रो. प्रवीण सक्सेना

प्रो. वी. स्वामी दास

डॉ. रोहित राजवंशी

डॉ. भावना जौहरी

सलाहकार

प्रो. एस.के. चौहान

अनुवादक

डॉ. नमस्या

डॉ. निशीथ गौड़

डी.ई.आई.–ओ.डी.ई.
(डी.ई.आई. ऑनलाइन और दूरस्थ शिक्षा)

संरक्षक

प्रो. सी. पटवर्धन

प्रो. वी.बी. गुप्ता

संपादकीय सलाहकार

प्रो. एस.के. चौहान

प्रो. जे.के. वर्मा

संपादकीय मंडल

डॉ. सोनल सिंह

डॉ. मीना पायदा

डॉ. लॉलीन मल्होत्रा,

डॉ. बानी दयाल धीर

श्री राकेश मेहता

अनुवादक

डॉ. स्वामी प्यारी कौड़ा

डी.ई.आई. Alumni
(AADEIs & AAFDEI)

संपादक

प्रो. गुर प्यारी जंडियाल

संपादकीय समिति

डॉ. सरन कुमार सतसंगी,

प्रो. साहब दास

डॉ.बानी दयाल धीर

श्रीमती शिफाली सत्संगी

श्रीमती अरुणा शर्मा

डॉ.स्वामी प्यारी कौड़ा

डॉ. गुरप्यारी भटनागर

डॉ. वसंत वुप्पुलुरी

अनुवादक

डॉ. स्वामी प्यारी कौड़ा

डॉ. नमस्या

प्रशासनिक कार्यालयः

पहली मंजिल, 63,

नेहरू नगर,

आगरा –282002

पंजीकृत कार्यालयः

108, साउथ एक्स प्लाजा –1,

साउथ एक्सटेंशन पार्क II,

नई दिल्ली–110049

चित्रण, मुद्रण एवं ई–प्रकाशनः दयालबाग़ प्रेस